ईश्वर और पेरियार

1977 की बात है, मद्रास हाईकोर्ट में एक याचिका आई जिसमें कहा गया था कि तमिलनाडु में पेरियार की मूर्तियों के नीचे जो बातें लिखी हुई हैं, वे आपत्तिजनक हैं और लोगों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाती हैं इसलिए उन्हें हटाया जाना चाहिए। याचिका को खारिज करते हुए हाईकोर्ट ने कहा कि ईरोड वेंकट रामास्वामी पेरियार जो कहते थे, उस पर विश्वास रखते थे इसलिए उन के शब्दों को उनकी मूर्तियों के पैडेस्टल पर लिखवाना गलत नहीं है।

पेरियार की मूर्तियों के नीचे लिखा था-

ईश्वर नहीं है और ईश्वर बिलकुल नहीं है। जिस ने ईश्वर को रचा वह बेवकूफ है, जो ईश्वर का प्रचार करता है वह दुष्ट है और जो ईश्वर की पूजा करता है वह बर्बर है।

पेरियार नायकर के ईश्वर से सवाल :-

1. क्या तुम कायर हो जो हमेशा छिपे रहते हो, कभी किसी के सामने नहीं आते?
2. क्या तुम खुशामद परस्त हो जो लोगों से दिन रात पूजा, अर्चना करवाते हो?
3. क्या तुम हमेशा भूखे रहते हो जो लोगों से मिठाई, दूध, घी आदि लेते रहते हो?
4. क्या तुम मांसाहारी हो जो लोगों से निर्बल पशुओं की बलि मांगते हो?
5. क्या तुम सोने के व्यापारी हो जो मंदिरों में लाखों टन सोना दबाये बैठे हो?
6. क्या तुम व्यभिचारी हो जो मंदिरों में देव दासियां रखते हो ?
7. क्या तुम कमजोर हो जो हर रोज होने वाले बलात्कारों को नही रोक पाते?
8. क्या तुम मूर्ख हो जो विश्व के देशों में गरीबी-भुखमरी होते हुए भी अरबों रुपयों का अन्न, दूध,घी, तेल बिना खाए ही नदी नालों में बहा देते हो?
9. क्या तुम बहरे हो जो बेवजह मरते हुए आदमी, बलात्कार होती हुयी मासूमों की आवाज नहीं सुन पाते?
10. क्या तुम अंधे हो जो रोज अपराध होते हुए नहीं देख पाते?
11. क्या तुम आतंकवादियों से मिले हुए हो जो रोज धर्म के नाम पर लाखों लोगों को मरवाते रहते हो?
12. क्या तुम आतंकवादी हो जो ये चाहते हो कि लोग तुमसे डरकर रहें?
13. क्या तुम गूंगे हो जो एक शब्द नहीं बोल पाते लेकिन करोड़ों लोग तुमसे लाखों सवाल पूछते हैं?
14. क्या तुम भ्रष्टाचारी हो जो गरीबों को कभी कुछ नहीं देते जबकि गरीब पशुवत काम करके कमाये गये पैसे का कतरा-कतरा तुम्हारे ऊपर न्यौछावर कर देते हैं?
15. क्या तुम मूर्ख हो कि हम जैसे नास्तिकों को पैदा किया जो तुम्हे खरी खोटी सुनाते रहते हैं और तुम्हारे अस्तित्व को ही नकारते हैं?

खलील जिब्रान की एक नीतिकथा! तापस और चौपाये

हरी-भरी पहाड़ियों के बीच एक तपस्वी रहता था। वह हृदय और आत्मा दोनों से पवित्र था। सारे इलाक़े के जानवर और पक्षी जोड़े में उसके पास आते थे। वह उनसे बतियाता था। वे प्रसन्नतापूर्वक उसे सुनते और एकदम निकट आ बैठते। रात गहराने तक वे वहीं रहते जब तक कि वह उन्हें जाने को न कहता।

एक शाम, जब वह प्रेम पर बोल रहा था, एक तेंदुए ने सिर उठाया और तपस्वी से पूछा, "आप हमें प्रेम का पाठ पढ़ा रहे हैं। बताइये सर, कि आपका जोड़ीदार किधर है?"

"मेरा कोई जोड़ीदार नहीं है।" तापस ने कहा।

यह सुनते ही उन चौपायों और परिन्दों के बीच अचरजभरा घना शोर उठ खड़ा हुआ। वे आपस में बतियाने लगे, "जब वह खुद ही प्यार और साथ रहना नहीं जानता, तब हमें यह सब कैसे सिखा सकता है?"

संध्या समय ही वे उसे अकेला छोड़कर उठ खड़े हुए और चले गए।

उस रात चटाई पर तापस औंधे मुँह लेटा। वह दहाड़ें मार-मार कर रोने लगा और जोर-जोर से अपनी छाती को पीटने लगा।

अर्जुन युद्ध नहीं करना चाहता था

अभी तक मैं सोचता था कि अर्जुन युद्ध नहीं करना चाहता था, पर कृष्ण ने उसे लड़वा दिया.यह अच्छा नहीं किया।

लेकिन अर्जुन युद्ध नहीं करता, तो क्या करता? कचहरी जाता! जमीन का मुकदमा दायर करता. अगर वन से लौटे पांडव अगर जैसे तैसे कोर्ट-फीस चुका भी देते, तो वकीलों की फीस कहां से देते? गवाहों को पैसे कहां से देते?

और कचहरी में धर्मराज का क्या हाल होता?

वे क्रॉस एक्जामिनेशन के पहले ही झटके में उखड़ जाते.

सत्यवादी भी कहीं मुकदमा लड़ सकते!

कचहरी की चपेट में भीम की चर्बी उतर जाती. युद्ध में तो अट्ठारह दिन में फैसला हो गया; कचहरी में अट्ठारह साल भी लग जाते, और जीतता दुर्योधन ही, क्योंकि उसके पास पैसा था।

सत्य सूक्ष्म है, पैसा स्थूल है।

न्याय देवता को पैसा दिख जाता है; सत्य नहीं दिखता।

शायद पांडव मुकदमा लड़ते लड़ते मर जाते क्योंकि दुर्योधन पेशी बढ़वाता जाता. पांडवों के बाद उनके बेटे लड़ते, फिर उनके बेटे.

बड़ा अच्छा किया कृष्ण ने जो अर्जुन को लड़वाकर अट्ठारह दिनों में फैसला करा लिया. वरना आज कौरव-पांडव के वंशज किसी दीवानी कचहरी में वही मुकदमा लड़ते होते।

- हरिशंकर परसाई

सरकार की प्राथमिकता आधार कार्ड देना है इसलिए वह सबको राशन नहीं दे पा रही

मिथुन प्रजापति

एक साहब बड़े देशभक्त थे। कहने लगे कि देश सर्वोपरि है, बाकी सब उसके बाद। मैंने कहा- पर प्राथमिकता तो देश के नागरिकों को मिलनी चाहिए। जब नागरिक ही नहीं रहेंगे तो देश कैसा ?

साहब जिद्दी थे और बड़े वाले देशभक्त तो थे ही, कहने लगे- जब देश ही नहीं रहेगा तो देशवासी कहाँ से रहेंगे ?

मैंने फिर पूछा- देश से आपका क्या तात्पर्य है ?

वे मुस्कुराते हुए कहने लगे- देश का तात्पर्य हमारी सीमा से है। फैली हुई जमीन से है।

हमनें कहा- मतलब प्राथमिकता में देश की जमीन है ?

उन्होंने कहा- जी।

वे थोड़ा रुके, शायद कुछ सोच रहे थे। फिर अचानक थोड़ा चीखने जैसे लहजे में कहने लगे- देश की सीमा पर जवान जान देते हैं देश के लिए ही न, देश की जमीन के लिए ही न ?

मैंने उनकी हाँ में हाँ मिला दिया। जब बहस सेना तक पहुंच जाए तो चुप हो जाना चाहिए। क्योंकि तर्क के लिए कुछ नहीं बचता।

बात प्राथमिकता की थी। सबकी प्राथमिकताएं अलग-अलग होती हैं। आम आदमी कहेगा- क्या सीमा क्या देश, बस दो वक्त की रोटी और रोजगार का जुगा? हो जाये यही मेरी प्राथमिकता में है। लेकिन भरे पेट वाला कहता है- देश सर्वोपरि है।

प्राथमिकता परिस्थिति और मानसिक के ऊपर निर्भर है। मेरे एक रिश्तेदार हैं। उनकी मानसिकता ये कहती है कि बिना बेटे के जिंदगी सफल नहीं हो सकती। उन्होंने बेटा पैदा करने को प्राथमिकता दे दी। अब उनकी नौ बेटियां हैं और बेटा एक भी नहीं। पर उन्होंने अपनी प्राथमिकता नहीं छोड़ी। पत्नी फिर गर्भवती है। लोग कहते हैं उम्मीद से हैं। कुछ लोग गर्भवती है, कहने में असहज महसूस करते हैं। उन्हें लगता है कि यह शब्द असंस्कारी है इसलिए वे कहते हैं- उम्मीद से हैं।

पर संस्कार के चक्कर में वे ये भूल जाते हैं कि उम्मीद से हैं वाक्य किसी धूर्त की खोज है। जब धूर्त खुले तौर पर यह नहीं कह पाया होगा- कि बेटा होने की उम्मीद लगाए बैठे हैं तब उसनें कह दिया होगा- पत्नी जी उम्मीद से हैं।

हां तो बात रिश्तेदार की थी। उन्हें दसवीं बार लड़का पैदा हो गया। खूब पटाखे फूटे, मिठाईयां बटीं। मुझे निमंत्रण के लिए फोन आया। मैंने कहा- भाई आपके और भी नौ बच्चे हुए पर कभी आपने मुझे निमंत्रण में नहीं बुलाया ?

वे कहने लगे- इस बार बेटा हुआ है।

मैं भड़क गया। वे असहज हो गए। मैंने उन्हें कहा- मेरी प्राथमिकता में बेटा- बेटी बराबर हैं। यदि आपने मुझे बेटी पैदा होने पर खुशी में शामिल होने के लिए बुलाया होता तो मैं आज जरूर आता। वे मेरी बात समझ तो गए पर गुस्से में फोन रख दिया।

इन घटनाओं में एक बात मैंने और नोटिस की है। महिलाओं के लिए कोई प्राथमिकता नहीं होती। उसकी प्राथमिकता उसके पिता, पति या बेटे की प्राथमिकता में निहीत है।

सरकार के एक मंत्री जी चिल्ला-चिल्लाकर भाषण में कहे जा रहे थे- हमारी प्राथमिकता में सबके हाथ आधारकार्ड पहुंचाना था और इसमें हम सफल होते दिख रहे हैं। आधार के हो जाने से घपले रुक जाएंगे। गरीबों का अनाज उन्हें पूरा मिलेगा।

एक भोला आदमी बीच में बोल पड़ा- साहब, हमार अधार बन तो गवा है पर रासन लेत की अंगूठा मैच नाही होत है। चार बार से रासन नाय मिला है सरकार।

मंत्री जी के अफसर ने कहा- आप बैठ जाइए। सरकार की प्राथमिकता अभी आधारकार्ड बनाने की है।

बात सही है। सरकार की प्राथमिकता में सबको आधारकार्ड देना है क्योंकि चुनाव के पहले आंकड़े भी तो पेश करने हैं। सरकार के पास दस्तावेज के आंकड़े होते हैं। भूख से मरने के आंकड़े रखने के लिए सरकार के पास कोई रजिस्टर नहीं है। आखिर जरूरत भी तो नहीं है मौत के आंकड़ों की! चुनाव के भाषण में अब ये कोई थोड़ी कहेगा कि हमारे शासन में भूख से इतने लोग मर गए इसलिए आप हमें वोट दें।

समस्या विकट है। जिनका पेट भरा है वह कुछ बोलता नहीं और जिनके पास अनाज नहीं उनकी कोई सुनता नहीं। आखिर सुने भी कोई क्यों ? सब की परिस्थितियां अलग हैं, सब की प्राथमिकताएँ अलग हैं।

रजिया बानो या शर्मा जी ? फर्जी, सांप्रदायिक और नफरतबाज प्रोफाइल हुआ बेनकाब

"हिंदुस्तान का शेर जिसने As*** का बदला लिया। (Hindustan ka sher jisne As*** ka badla lia)" यह सांप्रदायिक पोस्ट रजिया बानो नाम के फेसबुक अकाउंट से मंदसौर बलात्कार मामले के आरोपी का समर्थन देते हुए किया गया है और कहा गया है कि यह कठुआ बलात्कार पीड़िता का बदला है। कठुआ बलात्कार मामले ने कुछ ही महीने पहले पूरे देश को झकझोड़ कर रख दिया था। इस पोस्ट के अनुसार मंदसौर की घटना कठुआ रेप केस में मुस्लमान लड़की से हिन्दू द्वारा किये गए बलात्कार और हत्या का बदला है क्योंकि इसमें पीड़िता हिन्दू और आरोपी मुसलमान है।

सोशल मीडिया पर यह पोस्ट विवाद का कारण बन गया, जहाँ इसे मंदसौर की घटना पर एक मुस्लिम की प्रतिक्रिया के तौर पर देखा जाने लगा। यह पोस्ट एक सांप्रदायिक तनाव को उत्तेजित करने के स्पष्ट इरादे से लिखा गया था और इसने अपना उद्देश्य हासिल कर लिया था। यह खतरनाक सोच रखने वाली रजिया बानो कौन है? यह असली अकाउंट है या नकली? आइए पता करते हैं।

इस फेसबुक प्रोफाइल के अनुसार रजिया बानो कराची, पाकिस्तान में रहती है और आवर लेडी ऑफ फातिमा यूनिवर्सिटी (Our Lady of Fatima University: OLFU) की एक सदस्य है। उन्होंने इसी विश्वविद्यालय में फैशन कला का अध्ययन करने का भी दावा किया है। प्रोफाइल में ऐसे कई संकेत है जो रजिया बानो को फर्जी खाता साबित करता है।

1. नाम को लिखे जाने में अंतर

पहली बार ही देखने में जिस बात पर सबसे पहले नजर पड़ती है वह है इस यूजर का नाम। रजिया (Rajiya) में "z" आता है ना कि "j"। कई हिंदी बोलने वाले "z" को "j" के रूप में उच्चारण करते हैं क्योंकि ज्यादातर हिंदी बोलने वाले वर्णमाला का सही उपयोग नहीं कर पाते हैं, लेकिन लिखते समय एक पाकिस्तानी ऐसी गलती करे यह असंभव लगता है।

2. इन्टरनेट पर उपलब्ध तस्वीर का इस्तेमाल

इस यूजर की तस्वीर एक आम प्रोफ़ाइल तस्वीर है जिसका उपयोग कई सालों से किया जा रहा है। यह नकली खातों में देखी जाने वाला एक प्रवृत्ति है जहां अक्सर वे इंटरनेट पर उपलब्ध तस्वीरों का उपयोग करते हैं। ऑल्ट न्यूज ने पहले भी इस तरह की एक फर्जी अकाउंट giniromet को बेनकाब किया था।

3. पाकिस्तानी का हिंदी भाषा में पोस्ट लिखना

पाकिस्तानी रजिया बानो की प्रोफाइल से कई पोस्ट हिंदी में किए गए है जो इस ओर इशारा करते हैं कि यह एक भारतीय द्वारा बनाया गया नकली अकाउंट हो सकता है।

यहाँ "इंसाल्लाह" को "इंसाअल्लाह" करके लिखा गया है।

4. एक चिकित्सा विश्वविद्यालय में फैशन कोर्स

वह विश्वविद्यालय जहां रजिया कराची से पढने का दावा करती है वह पाकिस्तान में मौजूद ही नहीं है। आवर लेडी ऑफ फातिमा यूनिवर्सिटी (Our Lady of Fatima University: OLFU) फिलीपींस स्तिथ एक विश्वविद्यालय है जो दवा, नर्सिंग और दंत चिकित्सा में पाठ्यक्रम प्रदान करता है। रजिया ने यहाँ से फैशन कोर्स करने का दावा किया है। रजिया का फेसबुक प्रोफाइल इसी विश्वविद्यालय में एक फैकल्टी होने का दावा भी करता है जबकि उसके प्रोफाइल के अनुसार वो कराची, पाकिस्तान में रहती है।

5. रजिया बानो या शर्मा जी ?

20 मई के एक फेसबुक पोस्ट ने इस नफरतबाज रजिया बानो को पूरी तरह उजागर कर दिया। 'क्या हाल है दोस्तों' पोस्ट के जवाब में कमेंट्स सेक्शन में कुछ यूजर ने यह पूछा कि शर्मा जी नाम क्यों बदल लिया। एक कमेंट में रजिया बानो को "शर्मा जी" कहा गया है और दुसरे कमेंट में "पवन" कहा गया है। इस व्यक्ति को अपने नए अवतार में अपने दोस्तों के साथ बातचीत करते हुए देखा जा सकता है। शर्मा जी ने कहा, "बस इंतजार करें और देखें प्रिय" (अनुवाद)।

रजिया बानो का प्रोफाइल अब डिलीट कर लिया गया है। कई सोशल मीडिया यूजर इसके पोस्ट को सच मान बैठे और मंदसौर की घटना पर पाकिस्तानी मुसलमान की प्रतिक्रिया के रूप में देख कर आक्रोश प्रकट करने लगे। इस व्यक्ति का एजेंडा भयानक था इसने इस तरह के सांप्रदायिक रंग देने वाले पोस्ट करने से पहले एक बार सोचा भी नहीं। सतर्क रहें, यह व्यक्ति अभी भी किसी दूसरे नाम से सोशल मीडिया पर एक्टिव होगा और फिर से अपने विभाजनकारी एजेंडे को पूर्ण करने के लिए नई योजनायें बना रहा होगा।

सूचना, प्रौद्यौगिकी एवं संस्कार

आज सूचना और प्रौद्यौगिकी का युग है जिसमें देखते ही देखते अकल्पनीय प्रगति हुई है सुदृढ़ नेटवर्क होने के कारण विश्व सिकुड़ गया है। सब आपस में जुड़ गए हैं और विश्व ने ग्लोबल विलेज का रूप ले लिया है। अनेकों संसाधनों के माध्यम से हमें सूचनाएँ मिलती हैं। इसके विभिन्न प्रकार हैं जैसे वट्सअप, नेट, गूगल, फेसबुक टीवी, ब्लॉग अथवा ट्वीटर इत्यादि इनका प्रयोग आजकल बच्चे भी करते हैं। बच्चों के पास, अनेक प्रकार के साधन हैं जिनके द्वारा वह ज्ञान प्राप्त करता है, परन्तु सोचने का विषय यह है कि जब बच्चों के पास इतने अधिक सूचना संबंधित साधन होंगे तो बच्चों अवश्य ही भ्रमित भी होंगे कि उन्हें क्या अपनाना है और क्या नहीं क्योंकि इन स्त्रोतों के ज़रिये दिए जाने वाले ज्ञान का कोई मापदंड नहीं होता है। यहाँ कोई ऐसा विधान नहीं है कि किस उम्र के बच्चों के लिए क्या आवश्यक है और क्या नहीं। माना कि ये सभी स्त्रोत ज्ञान का भंडार है जिससे बच्चे विविध प्रकार के बातें सीख सकते हैं, परन्तु सभी चीज़ें बच्चों के लिए नहीं होती है। ऐसी स्थिति में बच्चे छोटी आयु में ही परिपक्व हो जाता है और उसकी बुद्धि निर्णय लेने में भ्रमित होती है। बच्चें भी यह तय नहीं कर पाते की वास्तव में उनके द्वारा चयन किया गया विषय उचित है या नहीं। यह स्थिति भी इस कारण उत्पन्न हुई क्योंकि आजकल माँ बाप के पास समय नहीं है वे बच्चों को विभिन्न उपकरण देकर अपने कर्त्तव्यों की इति समझते हैं। वे नहीं देखते की उनके बच्चों को किस चीज़ की आवश्यकता है। आजकल के अभिभावक बच्चों के खान-पान पर भी ध्यान नहीं देते वे अपने ही बच्चों के लिए पोषक तत्वों के विषय में नहीं जानते।

बच्चों जो फास्टफूड ग्रहण करते हैं उनसे उन्हें पोषक तत्व कम और विषाक्त तत्व अधिक प्राप्त होता है। इन सबका परिणाम बहुत ही अधिक भयावह है इन सब चीज़ों से बच्चों के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ता है और वे आगे से भटकते हैं। इन सब का उत्तरदायित्व केवल ये सूचना के साधन ही नहीं हैं। अभिभावक की अवहेलना भी इसका उत्तरदायी कारण बनता है। कहने का तात्पर्य यह कि पारिवारिक मुल्यों का निर्वाह होना आवश्यक है। आजकल अधिकतर परीवारों में यह मूल्य आज शेष हो चुके हैं।

अभिभावकों के पास अपने बच्चों के लिए पर्याप्त समय नहीं है। बच्चों को सही दिशा देने के लिए परिवार का सहयोग आवश्यक है। संस्कारों की ज़रूरत होती है, उचित दिनचर्या और सात्विक भोजन हो साथ ही संस्कारों का समावेश भी अवश्य हो।

ऋषिपाल चौहान, चेयरमैन
जीवा पब्लिक स्कूल